Vol 6 Issue 2 August 2016 ISSN No :2231-5063

International Multidisciplinary Research Journal

Golden Research Thoughts

Chief Editor
Dr.Tukaram Narayan Shinde

Publisher
Mrs.Laxmi Ashok Yakkaldevi

Associate Editor
Dr.Rajani Dalvi

Honorary
Mr.Ashok Yakkaldevi

Welcome to GRT

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2231-5063**

Golden Research Thoughts Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial board.Readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

Regional Editor

Dr. T. Manichander

International Advisory Board

Kamani Perera
Regional Center For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus PopPhD, Partium Christian University, Oradea,Romania

Mohammad Hailat
Dept. of Mathematical Sciences, University of South Carolina Aiken

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences Al. I. Cuza University, Iasi

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Dept of Chemistry, Lahore University of Management Sciences[PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

......More

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University,Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University,Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary,Play India Play,Meerut(U.P.)

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh,
Vikram University, Ujjain

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU,Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra
Maulana Azad National Urdu University

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.aygrt.isrj.org

ISSN: 2231-5063   Impact Factor : 4.6052(UIF)   Volume - 6 | Issue - 2 | August - 2016

GRT Golden Research Thoughts

नई कविता में राजनैतिक चेतना

नीतू थपलियाल, डिमरी
विषय– हिन्दी , डी.ए.वी. कॉलेज , देहरादून (उत्तराखण्ड)

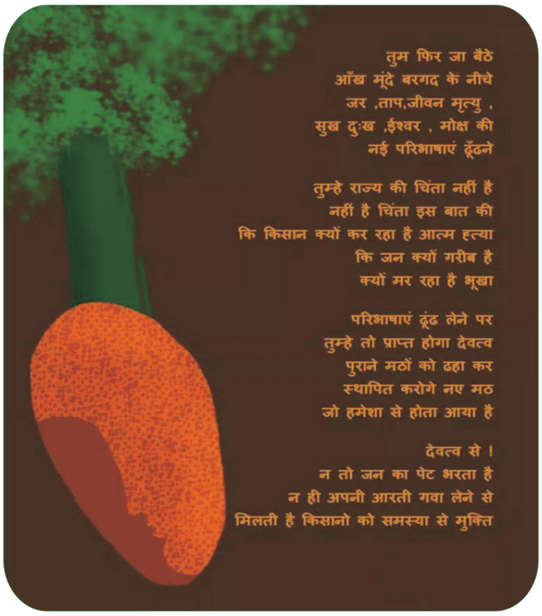

सारांश–

हिन्दी की नई कविता हिन्दी साहित्य परंपरा की महत्वपूर्ण कड़ी है, इसका जन्म कुछ विशेष साहित्यिक एवं सांस्कृतिक परिस्थितियों में हुआ है। आधुनिक काल के पूर्वार्द्ध तक राजनीति एवं साहित्य का क्षेत्र अलग–अलग रूप में स्वीकार किये जाते हैं और राष्ट्रीय आन्दोलन के दिनों में कविता राजनीति से सम्पृक्त हो गयी हैं। प्राचीन काव्य से लेकर अब तक जितनी भी कविता लिखी गई हैं, वह कहीं न कहीं अपने समय की राजनीति से प्रभावित हुई है। छायावादी कविता राजनीति से पुनः अलग हो गयी और प्रगतिवादी कविता राजनीतिक होने के साथ–साथ मानवीय भी थी। स्वतन्त्रता के बाद कवि राजनीति के क्षेत्र में भी अधिक सक्रिय होता गया, इसलिए राजनीति के बदलते हुए मूल्यों एवं प्रतिमानों को कविता में अभिव्यक्ति मिलनी स्वाभाविक ही थी। नये कवियों के एक बहुत बड़े वर्ग ने स्वतन्त्रता आन्दोलन को देखा और झेला था, इस प्रकार वे ब्रिटिश सत्ता के अमानवीय अत्याचारों को भूल नहीं पाये थे। समय के साथ राजनीतिक मूल्य बदले, जिसे नये कवियों ने पहचाना और अपनी कविता में जगह दी है और धीरे–धीरे राजनीति इतनी प्रधान हो गई है, कि साधारण व्यक्ति ने राजनीति के घेरों में स्वयं को पिसता हुआ महसूस किया है।

प्रस्तावना–

राष्ट्र के कर्णधारों ने 'समय आ गया है' की नीति को अपनाया है। समाचार–पत्र, आकाशवाणी के केन्द्रों तथा मन्त्रालयों की बैठकों में सर्वत्र कहा गया कि समय आ गया है, कि कठोर परिश्रम किया जाय, समय आ गया है, कि प्रत्येक भारतीय ईमानदारी से काम करे, समय आ गया है कि सब ठीक हो जाएगा, लेकिन वह समय कभी आया ही नहीं। 'समय आ गया है' कि नीति पर रघुवीर सहाय की कविता 'आत्महत्या के विरूद्ध' व्यंग्य करती हुई कहती है–

"समय आ गया है जब तब कहता है सम्पादकीय
हर बार दस बरस पहले मैं कह चुका होता है कि
समय आ गया है
एक गरीबी, ऊबी, पीली, रोशनी, बीबी,
रोशनी, धुन्ध, जाला, यमन, हरमुनियम अदृश्य
डब्बाबन्द गला भींच आकाशवाणी
अन्त में टड़ंग"[1]

इसी प्रकार से 'हर बार यही होता है' कविता में कवि पाता है कि– "हर बार उम्मीदें बाँधी जाती है और वादे किये जाते हैं/हर बार लगता है कि अब/.... वह ऐतिहासिक क्षण आ गया है किन्तु 'आखिर में हर बार यही होता है कि सारी उम्मीदें और सारे इरादे लाटरी के टिकट बन जाते हैं।" सारे देश का नक्सा 'आयोजनों की फूल मालाओं से इतना लद गया है कि अब वह दिखाई नहीं देता।"[2]

इसी प्रकार से धर्मवीर भारती जी कहते हैं कि– जन–जन के कल्याण व व्यवस्था करने वाला शासन ही जनतंत्र है। ऐसा शासन ऐश्वर्य और विकास का स्थान नहीं, राष्ट्र की लाखों–करोड़ों जनता के दुःख, अभाव, अन्याय को नष्ट करने के लिए यज्ञ स्थल होता है, राष्ट्र के सम्पूर्ण अभ्युदय के लिए जनतंत्रीय व्यवस्था होती है। भारत में इसी व्यवस्था को अपनाया गया है, लेकिन "राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के नेता कभी चुने नहीं जाते, उनकी नियुक्ति उनके नेता के इच्छानुसार होती है। तभी तो हिटलर ने 'माइन कॉफ' में जनतंत्र के संबंध में कहा था, "एक सत्य जिसे हमेशा दिमाग में रखना चाहिए, यह है कि बहुमत कभी भी आदमी की जगह नहीं ले सकता। बहुमत न सिर्फ अज्ञान का प्रतिनिधि है, बल्कि भीरूता का भी। और जिस प्रकार सौ मूर्ख मिलकर भी एक विवेकशील व्यक्ति के बराबर नहीं होते, उसी प्रकार सौ बुजदिल मिलकर भी कार्रवाई की कोई ऐसी राजनीतिक लाइन नहीं अपना सकते जिसके लिए नैतिक बल और साहस की आवश्यकता हो।"[3] देखा जाए तो जनतंत्रीय व्यवस्था के बावजूद भी जनता की स्थिति में विशेष परिवर्तन नहीं हुआ हैं, उन्होंने ठीक ही कहा था–

"हम जैसे पहले थे
वैसे ही अब भी हैं
शासक बदले
स्थितियाँ बिल्कुल वैसे ही है।"[4]

अज्ञेय इस बात पर विचार करते हैं कि आजादी के बीस वर्षों में किसको क्या मिला है, कवि स्वीकार करते हैं– "चलो ठीक है कि आजादी के बीस बरस से/तुम्हें कुछ नहीं मिला।" किन्तु कवि का अपनी पीढ़ी के लोगों से प्रश्न है–"पर तुम्हारे बीस बरस से आजादी को (या तुमसे बीस बरस की आजादी को) क्या मिला?/उन्नीस नंगे शब्द?/ अठारह लचर आंदोलन?/सत्रह फटीचर कवि?/सोलह लुंजी– हाँ,

कह लो, कलाएँ (पर चोरी, चापलूसी,/ सेंध मारना, जुआखोरी/लल्लोपत्तो और लबारियत/से सब पारंपरिक कलाएँ थी) आजादी के बीस बरस क्यों, बीस पीढ़ी पहले की।''[5]

इसी बात को धूमिल इसी प्रकार से कहते हैं कि जनतंत्र एक तमाशा है, जिसे 'घास और घोड़े' के रूपक द्वारा व्यक्त किया है–

''उसको समझा दिया है कि यहाँ
ऐसा जनतन्त्र है जिसमें
जिंदा रहने के लिए
घोड़े और घास को
एक जैसी छूट है
कैसी बिडम्बना है
कैसा झूठ है
दरअस्ल, अपने यहाँ जनतन्त्र
एक ऐसा तमाशा है
जिसकी जान,
मदारी की भाषा है।''[6]

कबीर की भाँति धूमिल की कविता छल, पाखण्ड, राजनीतिक ढ़ोंग आदि पर तीव्र प्रहार करती है, उनकी कविता की सबसे बड़ी विशेषता है– आजादी, जनतन्त्र और संसद और समाजवाद पर व्यंग्य करना है–

''क्या आजादी सिर्फ तीन थके हुए रंगों का नाम है
जिन्हें एक पहिया ढ़ोता है
या इसका कोई खास मतलब होता है?''[7]

x x x x x x x x x x x x x x

''मगर मैं जानता हूँ मेरे देश का समाजवाद
माल गोदाम में लटकती हुई
उन बाल्टियों की तरह है जिस पर 'आग' लिखा है
और उनमें बालू और पानी भरा है।

x x x x x x x x x x x x x x

अपने यहाँ संसद
तेल की वह धानी है
जिसमें आधा तेल है
और आधा पानी है।''[8]

उनकी अन्य कविताओं में भी राजनीतिक चेतना दिखाई देती है, वे उस मुहावरे को स्पष्ट करते हैं, जो आजादी और गाँधी के नाम पर चल रहा है, वे उस आदमी की नीयत को भी सामने लाते है जो पूरे समुदाय से अपना अपना स्वार्थ सिद्ध करता है, वह तीसरा आदमी है जो–

''एक आदमी
रोटी बेलता है
एक आदमी रोटी खाता है
एक तीसरा आदमी भी है
जो न रोटी बेलता है, न रोटी खाता है
वह सिर्फ रोटी से खेलता है
मैं पूछता हूँ–
यह तीसरा आदमी कौन है?
मेरे देश की संसद मौन हैं''।[9]

x x x x x x x x

''वे वकील हैं।
वैज्ञानिक हैं
अध्यापक हैं
नेता है
दार्शनिक हैं
लेखक हैं
कवि हैं
कलाकार हैं
यानी कि– कानून की भाषा बोलता हुआ
अपराधियों का एक संयुक्त परिवार है।''[10]

इसी प्रकार से शमशेर बाहादुर भी अपनी कविता के माध्यम से राजनीति का चेहरा सामने लाते हैं–

''राह तो एक थी हम दोनों की :
आप किधर से आए–गए !
–हम जो लुट गए, पिट गए, आप जो
राजभवन में पाए गए !
किस लीलायुग में आ पहुँचे
अपनी सदी के अन्त में हम
नेता, जैसे घास–फूँस के
रावन खड़े कराए गए !''[11]

वह हमेशा से जनता को धोखा दिये जा रहा है, कभी विज्ञापनों के माध्यम से, कभी नारों के माध्यम से और खूबसूरत शब्दों की आड़ में शोषण किये जा रहा है और इस छल को धूमिल अच्छी तरह से पहचानते हैं, इसलिए वे कहते हैं–

''स्नानघाट पर जाता हुआ हर रास्ता
देह की मण्डी से होकर गुजरता
x x x x x x x x x x x x
हर ईमान का एक चोर दरवाजा होता है
जो सण्डास के बगल में खुलता है।''[12]

यही नहीं वह शांति के पाठ के भी रट लगाये रहता है, और पूरी दुनियाँ भर में अंधकार की लहर फैलाता जा रहा है, इसे कवि इस प्रकार से कहते हैं–

''अखबारों की सुर्खियाँ मिटाकर दुनियाँ के नक्शे पर अन्धकार की
एक नई रेखा खींच रहा हूँ।
मैं अपने भविष्य के पठार पर आत्महीनता का दल–दल उलीच रहा हूँ।
x x x x x x x x x x x x x x x
युवकों को आत्महत्या के लिए रोजगार दफ्तर
पंचवर्षीय योजनाओं की सख्त चटानों को
कागज से काट रहा हूँ।
बंदों को बीते हुए को दर्प और बच्चों को विरोधी
चमड़े का मुहावरा सिखा रहा हूँ।
मेरे मोहन रेखा एक मुर्दे की बाल में सो रही है
और मैं दुनियाँ के शांति दूतों और जूतों को
परम्परा की पालिश से चमका रहा हूँ।''[13]

इसी प्रकार से जगूड़ी जी भी अपनी कविता के माध्यम से दिखाते है कि अवसरवादिता भी आज के आदमी के चरित्र में हावी हो गया है। पैतंरा बदलने की कला–सफलता की एकमात्र कुंजी बनकर रह गयी है–

''किसी ने कहा
इसकी कोई जुबान नहीं
जब इसे कहना कुछ होता है
और करना कुछ होता है
तो यह इसी तरह अपनी जुबान बदल देती है
मतलब है कि इधर भी चरता है उधर भी चरता है।''[14]
x x x x x x x x
मित्र इन दिनों सबने
अपनी असली जीभ का इस्तेमाल बन्द कर दिया है।''[15]

एक कठं विषपायी में कवि दिखाते हैं कि वारिणी की कोमल, प्रेममयी निश्छल भाषा का दक्ष पर कोई असर नहीं होता है क्योंकि इससे साफ तौर से जाहिर होता है कि शासक या सत्ता की 'व्यक्तिगत सनक' या उदात्त भावों से कोई सरोकार नहीं होता है। वह छल और कठोरता की भाषा जानती है, इस नैतिकता विहीन भाषा को दक्ष स्वीकारते हैं–यह राजनैयिकों की भाषा है, इसकी शब्दावली अलग है–

''दक्षः मुझे मान्य है
किन्तु देवि
यह राजनयिकों की भाषा है
इसकी शब्दावली अलग है।
इसमें उत्तम या उदात्त–से
भावों के अभिव्यक्तीकरण को
समुचित शब्द नहीं होते हैं।''[16]

x x x x x x x x x x x
वीरिणी : शिथिल व्यवस्था नहीं
हृदय की सहज–जात दुर्बलता है यह।
जैसे हर मनुष्य
अपनी सामर्थ्य और सीमा के भीतर
जीवित
किसी सत्य से सहसा कट जाने पर
व्याकुल हो उठता
या क्रोधित हो उठता है।
वैसे ही अपना सुलभा भी
विवश दुखी है।''[17]

कहने का तात्पर्य है कि शासक अपने मद में व्यक्ति की स्वतन्त्र बोध, चिंतन और प्रभा सब कुछ भुला देता है इसी प्रकार से तुलसीदास ने भी रामचरितमानस में कहा है–

''जौं अचवँत नृत मातहिं तेई।''[18]
जो राज्य सत्ता को पाने से मतवाले हो जाते हैं।

निष्कर्ष रूप से कहा जा सकता है कि नई कविता के कवियों की कविता में राजनीतिक चेतना अनेक जगहों पर दिखाई देती है, जिससे ज्ञात होता है कि वह अपने समय की झूठी राजनीति से आहत थे, जो कि उनकी कविता में मुखरित हुई है। देखा जाय तो समय की चेतना

संदर्भ

१.सुरेश शर्मा (संपा.), रघुवीर सहाय रचनावली भाग–१,आत्महत्या के विरूद्ध, पृ.सं.–१४३
२.भारत भूषण अग्रवाल, एक उठा हुआ हाथ, पृ.सं. ४१–४२
३.नंद किशोर नवल, मुक्तिबोध ज्ञान और संवेदना, पृ.सं.–४४६
४.धर्मवीर भारती, अंधा युग, पृ.सं.–८३
५.कृष्णदत्त पालीवाल (संपा.), अज्ञेय रचनावली खण्ड(२), पृ.सं.–१६६–२००
६.धूमिल, संसद से संड़क तक, पटकथा, पृ.सं.–१०६
७.धूमिल, संसद से सड़क तक, बीस साल बाद, पृ.सं.–१२
८.धूमिल, संसद से सड़क तक, पटकथा, पृ.सं.–१२७
९.डॉ. शुकदेव सिंह (संपा.), धूमिल की कविताएँ (रोटी और संसद) पृ.सं.–७०
१०.धूमिल, संसद से सड़क तक, पटकथा, पृ.सं.–१२६
११.शमशेर बहादुर सिंह, काल तुझ से होड़ है मेरी, पृ.सं.–४१
१२.धूमिल, ससंद से सड़क तक, सच्ची बात, पृ.सं.–७७–७८
१३.धूमिल, संसद से सड़क तक, शांतिपाठ, पृ.सं.– २६–२७
१४.लीलाधर जगूड़ी, रात अब भी मौजूद है:स्वतन्त्र जुबान, पृ.सं.–२२
१५.वही, पृ.सं.–२२,
१६.दुष्यन्त कुमार,एक कठं विषपायी, पृ.सं.–२१,
१७.दुष्यन्त कुमार,एक कठं विषपायी, पृ.–२२,२३
१८.रामचरितमानस, सं.–पं. ज्वालाप्रसाद, पृ.सं.–४६२,

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Book Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- ✶ International Scientific Journal Consortium
- ✶ OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- EBSCO
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database
- Directory Of Research Journal Indexing

Golden Research Thoughts
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.aygrt.isrj.org